OM-10 -2018 FINAL_Page 1 and 2 7/27/2018 1:44 PM Page 4

दादी जी के साथ बिताये कुछ अविस्मरणीय लम्हें, जो बने जीवनपर्यंत प्रेरणादायी

जीवन के सफर में बहुत सारे हमसफर मिलते और छूटते चले जाते। लेकिन उस सफर की कुछ यादें हमारे ज़हन में गहराई से उतर जाती हैं। कुछ हमको भले याद न रहें, लेकिन वो पल वो क्षण, जिसने हमें कुछ अलग अनुभव कराया हो, उन यादों को संजोना हमें अच्छा लगता है। ऐसे ही कुछेक, दादी जी के साथ बिताये हुए लम्हों की अविस्मरणीय यादें वरिष्ठ दीदीयों एवं भाइयों के यहाँ प्रस्तुत हैं, जिन्हें पढ़कर शायद आप भी उन यादों में खो जायें...

दादी की शिक्षायें पथप्रदर्शक

यज्ञ में हज़ारों ब्राह्मण भाई बहनें तथा अनेक वी.आई.पीज़. आते थे। वे हरेक से मिलती थीं। हर कार्य करने में उनका उमंग उत्साह सदा बना रहता था। वे त्याग और सादगी की भी मूरत थीं। प्यारे बाबा के स्लोगन जो खिलाओ, जो पहनाओ, जहाँ बिठाओ, इसकी पूर्ण धारणा उनके जीवन में देखी। वे मास्टर पालनहार थीं। एक हज़ार यज्ञ वत्सों और दस हज़ार निमित्त शिक्षिकाओं सहित सभी को बाप समान पालना देती थीं। मुरली से उनका जिगरी प्यार था। दिन में तीन बार स्वयं मुरली पढ़ती थीं और क्लास में भी सुनाती थीं। जब तक स्वस्थ रहीं, हमेशा स्वयं ही क्लास में मुरली सुनाती थीं। कितनी भी तकलीफ हो, पूछने पर यही कहती थीं, मैं बिल्कुल ठीक हूँ। एक दिन तो कहा, मैं बहुत सुखी हूँ। वे इस दुनिया में थीं ही नहीं, वो सम्पूर्णता की देवी बन चुकी थीं। सेवा करते महसूस होता था कि वतनवासी फरिश्ते की सेवा कर रही हूँ। उनके अंतिम दिनों में भी वे कभी भी परमात्म सेवाओं से दूर नहीं रहीं। हर बच्चे से उनका जिगरी प्यार था। दादी जी का मुस्कराता हुआ चेहरा और प्यार भरे नयन कभी भूलते नहीं हैं। आज भी दादी की शिक्षायें मुझे तरोताज़ा रखती हैं और कोई भी उलझन होती है तो दादी से पूछ कर हल्की हो जाती हूँ। – **ब्र.कु. मुन्नी दीदी,शांतिवन**

विरोधी भी सहयोगी बन जाता

दादी जी की निःस्वार्थ, निश्छल, निर्मल व पवित्र भावनाएं सहज ही सर्व को प्रभावित करती थी। वे अपनी निर्मलता से सहज ही विरोधी को भी बाबा का सहयोगी बना देती थीं। एक संत जो ब्रह्माकुमारी बहनों का काफी विरोध करते थे, उन्हें कहीं भी देखते तो मुंह फेर लेते थे, दादी जी ने मधुबन में एक विशाल संत सम्मेलन में उन्हें भी आमंत्रित किया। दादी जी के तप व उनकी महानता का अनुभव करते ही वह दादी जी के समक्ष नतमस्तक हो गया। उसने भरी सभा में कहा कि क्या दादी जी मुझे अपने छोटे भाई के रूप में स्वीकार करेंगी? दादी जी ने सभा में उन्हें राखी बांधी। उनका अनुभव सुनकर, पढ़कर आज भी हमें आगे बढ़ने की और उनके जैसा बनने की प्रेरणा मिलती है। – **ब्र.कु. आशा दीदी,गुरूग्राम**

ऐसे बनी वो हम सबकी दादी

मेरे सौभाग्य की मैं जितनी महिमा करूं, कम ही है। साकार बाबा ने मुझे और वेदान्ती बहन को आदरणीय दादी जी के साथ, उस समय भारत के सभी सेवाकेन्द्रों पर सेवार्थ भेजा था। आगरा, जयपुर, कानपुर, पटना, लखनऊ, उदयपुर, दिल्ली और मुम्बई आदि स्थानों पर दादी जी के साथ सेवार्थ रहने के बाद मैंने दादी जी से एक प्रश्न पूछा था, दादी जी, आप दादी जी कैसे बनी? दादी जी ने कहा, यह भी कोई सवाल होता है? मैंने कहा, यही मेरा सवाल है और आपको जवाब देना होगा। तब दादी जी ने कहा, देखो चंद्रिका, बाबा को कोई भी नया कार्य कराना होता तो सभा में सभी से पूछता, यह काम कौन करेगा? सबसे पहले मैं हाथ खड़ा कर देती थी, चाहे वो काम मुझे नहीं भी आता हो। फिर उस कार्य के बारे में मम्मा से या बाबा से पूछ लेती थी। कार्य के प्रति तत्परता और बाबा के आदेश को तुरंत स्वीकार करने के स्वभाव के आधार से दादी जी ने नंबरवन प्राप्त किया।

– **ब्र.कु. चंद्रिका बहन,महादेव नगर**

बड़ी ऊँची भावनाओं वाली दादी

दादी जी अक्सर सेवा अर्थ देहली में आती ही थीं और पाण्डव भवन में रुकती थीं। एक बार जैसे ही हॉल में कार्यक्रम पूरा हुआ तो दादी जी बरामदे में आकर बैठीं, सभी वापिस जा रहे थे। तभी एक परिवार की 5 वर्ष की बच्ची और 3 वर्ष का उसका भाई, बरामदे में आने की कोशिश कर रहे थे। वहाँ दो स्टैप थे चढ़ने के, छोटा बच्चा चढ़ नहीं पा रहा था। बच्ची ने अपने भाई को उठा लिया, पर ठीक से उठा नहीं पा रही थी। जैसे तैसे उसे छाती से लगाकर स्टैप चढ़कर बरामदे में आ गयी कि कहीं मेरा भाई गिर न जाये। दादी यह सब बड़े ही ध्यान से देख रही थीं। मैं दादी के पास ही खड़ी थी। दादी ने कहा, पुष्पा देखा तुमने, कितना प्यार है इसको अपने भाई से। यह है प्यार। जैसे दादी के उस कहने में भी गहरी भावनाएँ थीं और बड़े ही राज़ से दादी जी यह सब कह रही थीं। हमने अनुभव किया कि दादी जी की साधारण से साधारण बात में भी बड़ी ऊँची भावनाएँ, बेहद दृष्टिकोण, विशाल हृदय और शुभ कामनाएँ समाई हुई होती थीं। दादी जी को, मुरली सुनाते हुए मैंने कई बार सफेद-सफेद चमकते फरिश्ते के स्वरूप में देखा है। मैं कइयों को सुनाती थी कि आज दादी धरती पर फरिश्ता रूप थीं। – **ब्र.कु. पुष्पा बहन,पाण्डव भवन,दिल्ली**

निर्भयता से लेती थीं निर्णय

सत्यता व पवित्रता की शक्ति होने के कारण उनमें निर्णय शक्ति बहुत प्रबल थी। निर्भयता से निर्णय लेती थीं। उन्हें किसी बात का डर नहीं होता था। वे सभी को समान दृष्टि से देखती थीं, उनमें पक्षपात की भावना नहीं थी। जो सत्य बात होती थी उसे वे कह देती थीं। सामने वाला चाहे कितना भी बड़ा व्यक्ति हो, चाहे वो कोई संत हो, महामण्डलेश्वर हो, लेकिन दादी जी ऐसे बात करती थीं जैसे वह उनकी छोटी बहन हैं। दादी जी निर्मानता व निरहंकारिता की मूरत दिखाई देती थीं। इसलिए जो भी उनके सामने आता था वो उनके निर्मल व निश्छल स्वभाव से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता था। – **ब्र.कु. संतोष दीदी,मुम्बई**

ना आश्चर्य, ना स्तब्धता, ये थी उनकी कमाल

दादी जी अमृतवेले से रात्रि तक स्थूल, सूक्ष्म दिनचर्या में योग को प्रयोग में लाने का कार्य करती थीं। निराकारी स्थिति का आधार पॉवरफुल अमृतवेला, ये उनके जीवन का स्वरूप हो गया था। निर्विकारी स्थिति का आधार मुरली का गहन चिन्तन है। दादी जी प्रतिदिन रात्रि में और अमृतवेले योग के पश्चात् मुरली अवश्य गहराई से पढ़ती रहीं और सारे दिन में चाहे किसी से पर्सनल मिलें या क्लास कराएं, लेकिन उस दिन की मुरली की धारणा, श्रीमत ज़रूर सभी को पक्का कराती थीं। यज्ञ के सामने कितनी भी बातें आईं, उनमें भी वह न्यारी प्यारी रह उनका समाधान स्वयं भी करती थीं और औरों से भी कराती थीं। उदाहरणार्थ, एक सेन्टर से फोन आया कि सेन्टर के मकान में आग लग गई, सारा जल गया...। लेकिन दादी जी ने एक सेकण्ड भी चिन्ता नहीं की, न आश्चर्य, न स्तब्धता। तुरन्त कहा, कल्याणकारी ड्रामा...। उसके पश्चात शक्तिशाली स्थिति और वचनों द्वारा बहनों को समझानी और शक्ति देने लगीं। इस दृश्य को देखकर मुझे लगा कि कई बार एक काँच का गिलास टूटने से भी लगता है कि क्या हो गया, क्यों टूट गया लेकिन दादी जी की तो कमाल है!

– **ब्र.कु. मंजू बहन,ब्रह्मपुर**

उमंग और उत्साह दादी के दो पंख

एक बार काठमाण्डू(नेपाल) में विश्व हिन्दू महासम्मेलन हुआ था। उस समय दादी जी नेपाल में आयीं थीं। वहाँ बहुत सारे सन्त, महन्त, बड़े-बड़े महामण्डलेश्वर देश विदेश से आये हुए थे। उस प्रोग्राम में दादी जी को भाषण करना था परन्तु स्टेज बहुत बड़ी थी। दादी जी साधारण चौकी पर बैठी थीं जिसपर एक पतली चादर थी, दरी भी नहीं थी। हमने दादी जी से पूछा, आप कैसे बैठेंगी? आपको मुश्किल होगी। तो दादी जी ने कहा, मुझे इन्हें बाबा का सन्देश देना है, मुझे इतनी खुशी है कि पट पर बैठकर भी इन्हें सन्देश देना है। इतना उमंग उत्साह था। एक घण्टे तक भाषण किया। बाद में हमने पूछा, दादी जी, कोई दिक्कत तो नहीं हुई? तो दादी जी ने कहा, नहीं। आज एक घण्टा बाबा बोला है, दादी नहीं। इतनी देही अभिमानी थीं। श्वासों-श्वास बाप में समायी हुई, स्वच्छता और सादगी की अवतार थीं। दादी जी ने सिम्पल बनके दिखाया। सदा हर एक को उमंग देते हुए गिरे हुए को उठाया। हर बार अच्छा अच्छा करते अच्छा ही बनाया, सबके दिलों को जीत कर, सबको अपना बनाया और सबकी दादी बन गयीं। – **ब्र.कु. किरण बहन,काठमाण्डू**